जीवन की आत्मा का नियम और पाप और मृत्यु का नियम में अंतर

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

शालोम! हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम धन्य हो। आइए हम आज धर्मग्रंथों का अध्ययन करें। रोमियों के अध्याय 7 में हमें दो प्रकार के नियमों का उल्लेख मिलता है: पहला पाप और मृत्यु का नियम और दूसरा जीवन की आत्मा का नियम। ये दोनों नियम मनुष्य के भीतर कार्य करते हैं। आज हम इन नियमों को समझेंगे और जानेंगे कि ये कैसे काम करते हैं। कृपया ध्यान से पढ़ें; जल्दी में पढ़ने से सही समझ नहीं आएगी।

नियम क्या है?
नियम वह व्यवस्था है जो किसी समाज या व्यक्ति द्वारा बनाई जाती है, जिसे बिना शर्त पालन करना अनिवार्य होता है। उदाहरण के लिए, सूर्य का पूरब से उगना और पश्चिम में डूबना एक नियम है। यह नियम सूर्य को पालन करना पड़ता है; अगर सूर्य के पास विरोध करने की शक्ति भी होती, तो वह इसे नहीं तोड़ सकता। इसी तरह, वर्षा ऊपर से नीचे गिरती है, और अंधकार हमेशा प्रकाश से पीछे हटता है।

धर्मग्रंथों में भी ऐसे दो नियम मनुष्य के लिए कार्य करते हैं।

1) पाप और मृत्यु का नियम
यह पहला नियम है, जो मनुष्य के भीतर कार्य करता है। जैसा कि इसका नाम दर्शाता है, यह नियम मनुष्य को पाप करने के लिए मजबूर करता है, चाहे वह चाहे या न चाहे। जैसे सूर्य अपनी चाल से पीछे नहीं हट सकता, वैसे ही यह नियम भी मनुष्य को पाप करने के लिए बाध्य

जीवन की आत्मा का नियम और पाप और मृत्यु का नियम में अंतर

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

करता है।

इस नियम ने आदम और हव्वा के पतन के बाद मानव जाति में प्रवेश किया।

“क्योंकि पाप का वेतन मृत्यु है।” (रोमियों 6:23)
“प्रत्येक प्राणी की आत्मा, जो पाप करता है, वह मृत्यु
पाएगी।” (येज़ेकिएल 18:4)

यह नियम हमारे शरीर में काम करता है। इसी कारण, जन्म लेने वाला बच्चा तुरंत पाप करने लगता है—गुस्सा करना, झगड़ना, दुराचार की इच्छाएँ—यह सब बच्चे की स्वाभाविक प्रवृत्ति नहीं, बल्कि यह नियम उसकी शरीर रचना में काम कर रहा है।

पॉलुस ने इसे इस प्रकार वर्णित किया है:

“क्योंकि जो मैं नापसंद करता हूँ, वही मैं करता हूँ; और जो
मैं चाहता हूँ, वह मैं नहीं करता।
… क्योंकि मेरे अंगों में पाप का नियम मेरे दिमाग़ के नियम के विरुद्ध लड़ता है।” (रोमियों 7:20-23)

जीवन की आत्मा का नियम और पाप और मृत्यु का नियम में अंतर

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

मनुष्य इस नियम से तब तक नहीं छुटकारा पा सकता जब तक वह दूसरी बार जन्म नहीं लेता। बिना नए जन्म के, यह नियम मृत्यु तक उसके ऊपर काबिज रहेगा।

2) जीवन की आत्मा का नियम
ईश्वर ने देखा कि कोई भी मनुष्य अपनी शक्ति से पाप को हर नहीं सकता। इसलिए, उन्होंने पवित्र आत्मा के माध्यम से नया नियम दिया। यह नियम हमें बिना जोर-जबरदस्ती के परमेश्वर के आदेशों को पालन करने की क्षमता देता है।

यह नियम मनुष्य के हृदय में पाप के प्रति नफरत और न्याय के प्रति प्रेम उत्पन्न करता है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति बिना प्रचारक के भी पाप से डरता है और परमेश्वर का सम्मान करता है।

“आत्मा द्वारा चलो, और शरीर की इच्छाओं को पूरा न करो।
क्योंकि शरीर आत्मा के विरुद्ध काम करता है, और आत्मा शरीर
के विरुद्ध; इसलिए आप जो चाहते हैं, उसे करने में सक्षम नहीं हैं।
परंतु यदि आप आत्मा के द्वारा संचालित हैं, तो आप नियम के अधीन नहीं हैं।” (इफिसियों 5:16-18)

जीवन की आत्मा का नियम और पाप और मृत्यु का नियम में अंतर

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

यह नया नियम पाप को समाप्त नहीं करता, बल्कि उसे ढक देता है। यदि कोई व्यक्ति पवित्र आत्मा के नियम को नजरअंदाज करता है, तो पाप और मृत्यु का नियम फिर सक्रिय हो जाता है।

नए नियम को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है:

यीशु मसीह में विश्वास करना

वास्तविक हृदय परिवर्तन (पाप से तौबा)

सही बपतिस्मा

पवित्र आत्मा को स्वीकार करना

“देखो, दिन आने वाले हैं, कहते हैं यहोवा, जब मैं इस्राएल के
घर और यहूदा के घर के साथ नया नियम करूंगा। …क्योंकि मैं
उनका पाप माफ कर दूंगा, और उनकी अधर्मता को याद नहीं
करूंगा।” (यिर्मयाह 31:31-34)

पवित्र आत्मा का नियम जीवन में होने पर, पाप की इच्छा अपने आप कम हो जाती है। व्यक्ति को किसी प्रचारक या बाइबिल के विशिष्ट

जीवन की आत्मा का नियम और पाप और मृत्यु का नियम में अंतर

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

निर्देशों के अनुसार लगातार चेतावनी लेने की आवश्यकता नहीं रहती।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp